परिस्थितिकी मानवशास्त्र — परिस्थितिकी विज्ञान एक ऐसा विशेष विषय है जो मनुष्य के वातावरण के साथ अन्तःक्रिया की प्रक्रिया का अध्ययन करता है हम जानते हैं कि मनुष्य स्वयं को जीवित एवं सन्तुलित बनाए रखने के लिए वातावरण से भोजन तथा अन्य वस्तुएँ प्राप्त करता है वातावरण या पर्यावरण से जो वस्तुओं को वह प्राप्त करता है वह एक निश्चित प्रक्रिया के द्वारा होता है। यह प्रक्रिया एक पुनर्स्थापित दौर के अन्तर्गत होता है। मानवशास्त्र में हम मनुष्य के समाज और संस्कृति का अध्ययन करते हैं। जैसा कि हम जानते हैं संस्कृति मनुष्य के आवश्यकताओं की पूर्ति करने का एक साधन है और जिसकी इसकी व्याख्या Malinowski ने किया है। M.J. Herskovits भी कहते हैं कि संस्कृति मानव द्वारा निर्मित वातावरण है। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य प्राथमिक वातावरण से अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के दौरान प्राकृतिक वातावरण को प्रभावित करके उसे कृत्रिम वातावरण में बदलता है। परिस्थितिकी में हम मूल रूप से मनुष्य के वातावरण के साथ अन्तःक्रिया की प्रक्रिया को पढ़ते हैं किन्तु अब परिस्थितिकी मानवशास्त्र को

बात करते हैं तब यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि मनुष्य प्रकृति के साथ अपनी अन्तःक्रिया किसके माध्यम से करता है? हम जानते हैं कि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसके पास संस्कृति है। यही संस्कृति मनुष्य को अपने मौलिक आवश्यकताओं को विधिवत पूर्ण करने में सहयोग करती है। पारिस्थितिकी विज्ञान को जब हम सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखते हैं तब इसे हम पारिस्थितिकी मानवशास्त्र कहते हैं।

Date - 1/3/16

मानवशास्त्र संस्कृति का अध्ययन करता है और यह संस्कृति मानव को अपने वातावरण का आंकलन करना सीखाती है। एक संस्कृति ही हमें बतलाती है कि वातावरण या पर्यावरण में कौन-कौन वस्तुओं का हमें इस्तेमाल



करना है या उपयोग में लाना है वहीं किन-किन वस्तुओं से हमें स्वयं को दूर रखना है।

पारिस्थितिकी मानवशास्त्र के अन्तर्गत हम इन्हीं बातों का अध्ययन करते हैं। इस विषय के अंतर्गत हम किस प्रकार से अपने वातावरण में स्वयं को व्यवस्थित करता है तथा अनुकूलता की प्रक्रिया के द्वारा

स्वयं को रक्षा करता है, इसका अध्ययन करते हैं।

~ प्रत्येक समाज में उसकी विशिष्ट संस्कृति के अन्तर्गत वे अपने वातावरण में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किस संदर्भ में करते हैं इसका अध्ययन हम पारिस्थितिकी मानवशास्त्र के अन्तर्गत करते हैं; उदाहरण के लिए यदि हम Marvin Harris का अभिलेख The sacred cow देखें तो, यह स्पष्ट होता है कि भारत के संदर्भ में गाय मात्र एक पशु नहीं है। इस पशु में अनेक प्रकार की धार्मिक मान्यताएँ आर्थिक क्रियाकलाप इत्यादि जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार की परिभाषा किसी गाय के लिए भारतीय संस्कृति को स्पष्ट करती है और यह मूल रूप से संस्कृति में निहित है। गाय को एक पवित्र पशु माना गया है और इसको संज्ञा एक माँ के रूप में बतलाया गया है

भारतीय संस्कृति में —>

गो मांस के सेवन पर प्रतिबन्ध के आधार धार्मिक पाप कर्म को जोड़ कर प्रस्तुत किया गया है। मारविन हैरिस (Marvin Harris) कहते है कि गाय को पवित्र मानना या उसकी हत्या का प्रतिबंध एक धार्मिक पक्ष हो सकता है किन्तु असल मे इसका एक प्रमुख सांस्कृतिक पक्ष भी है और इसी का उल्लेख ~~मारविन~~ Marvin Harris अपने अभिलेख "The Sacred cow" मे किया है। हैरिस आगे कहते है कि आर्थिक विश्लेषण यदि देखें तो हम देखते है कि भारतीय गाय या बैल का भारत जैसे कृषक प्रधान जैसे देश मे बहुत बड़ा योगदान है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, और अनेक कृषि कार्य मे यही पवित्र पशु किसी कृषक को पुनः कर्म मे योगदान देते है। भारत के संदर्भ मे Marvin Harris ने पाया कि भारतीय गाय या बैल बहुत कम लागत मे अत्यधिक लाभ देते है। Harris कहते है कि भारतीय गाय को किसी विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं होती उसे जो कुछ भी रुखा - सुखा दे दिया जाए वह ग्रहण कर लेती है। वहीं यह

~~पशु~~ पवित्र पशु सूचक को कृषि कार्य के
अलावा दूध, खाद के रूप में गोबर
इत्यादि प्रदान करती है। Marvin Harris
यह मानते थे कि भारतीय संस्कृति
मे ऐसी पशु की रक्षा अत्यंत
आवश्यक है। और इस लिए इस
पवित्र पशु को 'गाय हमारी माता
है', इत्यादि की संज्ञा दी गई।
कालांतर में यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण
एक धार्मिक दृष्टिकोण में बदल
जाती है और इस प्रकार ~~से~~
परिस्थितिकी मानवशास्त्र के द्वारा
ही हम ~~के~~ एक अलग ढंग से
प्रस्तुत कर ने समझ सकते हैं। इस
उदाहरण में हमने देखा कि किसी भी
सांस्कृतिक ~~पशु~~ पहलू का प्रत्यक्ष
फल प्रयोग कार्य भिन्न २ हो
सकते हैं। परिस्थितिकी मानवशास्त्र में
हम इन्हीं तथ्यों का विशेष रूप
से ~~अध्~~ अध्ययन करते हैं और
उसके सांस्कृतिक कार्यों का पता
लगाने का प्रयास करते हैं।

सांस्कृतिक पारिस्थितिक तथा Marvin Harris का सिद्धांत

Marvin Harris की बहुचर्चित अभिलेख India's Sacred cow सन् 1966 में प्रकाशित हुई। Marvin Harris मानते हैं कि भौतिक संस्कृति में किसी समाज की संस्कृति असल रूप में दिखाई पड़ती है। Harris इस बात से अत्यधिक प्रभावित थे कि संस्कृतियाँ विभिन्न रूप में अजीबो गरीब तथा निराधार प्रतीत होती है। यह बात और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब हम किसी अन्य संस्कृति को देखते हैं। और तो और अनेको बार यह भी देखने को मिलता है कि जिस संस्कृति के लोग हैं वे भी स्पष्ट रूप से अपनी सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के विषय में सही-सही नहीं बता सकते। अनेको बार हमें यह



सुनने को मिलता है कि यह आदि काल से चला आ रहा है, इसलिए हम इसका पालन करते हैं किंतु Marvin Harris कहते हैं कि मनुष्य की सांस्कृतिक गतिविधियाँ कोई न कोई अर्थ अवश्य रखता है. भले ही वह सांस्कृतिक गतिविधि कितनी ही हास्यपूर्ण न हो। अपनी इस अभिलेख India's Sacred cow

→ गाय एक धार्मिक संकेत का द्योतक (?) थी। Marvin Harris ने इस पवित्र पशु को एक मानवशास्त्रीय तथा पारिस्थितिकी विज्ञान के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया अपनी अभिलेख में वे गाय की पूजा के इतिहास की चर्चा करते हुए शुरू करते है। पूर्व के वेद में गाय की बलि दी जाती थी तथा उसके मांस का भी सेवन किया जाता था। इसकी पूजा 3000 ई.पू B.C के आस-पास शुरू हुई और वेद ग्रंथो के आधार पर 2,000 A.D के आस-पास, इसकी बलि पर रोक लगना शुरू हो गया। 1000 A.D आते २ गौ मांस के सेवन पर हिन्दूओ का प्रयास का प्रतिबंध स्थापित हो गया। इसके पश्चात् भारतीय गाय एक धार्मिक रूप में प्रस्तुत होने लगी जिसका संबंध स्वीय रूप से शुभ तथा लाभ से था।

Marvin Harris इसकी सांस्कृतिक पारिस्थितिकी करते है। उन्होंने कहा कि भारतीय गाय मात्र धार्मिक प्रतिरूप नहीं है बल्कि परोक्ष रूप में यह महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलाप में जीविकोपार्जन में भारत जैसे कृषक देश का सहयोग करते है भारतीय गाय सर्वप्रथम इसे

उत्पादन के लिए नहीं जानी जाती है
फिर भी इनसे प्राप्त वस्तु से भारतीय
समुदाय का स्वास्थ्य तथा सेहत
बना रहता है। भारतीय बैल भी कम
खर्च में अत्यधिक लाभ प्रदान करने
की क्षमता रखते हैं। Marvin Harris
कहते हैं कि बैल ही मानसून प्रभावित
क्षेत्रों में हल चलाने का कार्य करते हैं।
कमजोर दिखाई पड़ने वाले बैल भी
अत्यधिक श्रम कार्य करने की क्षमता
रखते हैं। यह बैल की निर्माता भी
एक गाय होती है इसलिए Marvin
Harris ने गाय को भारतीय संस्कृति में
एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। Marvin
Harris अन्त: यह स्पष्ट करते हैं कि
भारतीय संस्कृति में भारतीय कृषक के
लिए बिना गौ माता के जीवन
सम्भव नहीं है।